पहला राज़

जो सबसे ज़रूरी है उसे सबसे ज़्यादा अहमियत दें

'पहचानो कि ज़्यादा अहमियत रखनेवाली बातें क्या हैं।'
—फिलिप्पियों 1:10.

इसका क्या मतलब है। कामयाब शादियों में पति और पत्नी दोनों ही अपनी ज़रूरतों से पहले अपने साथी की ज़रूरत का ध्यान रखते हैं। उनके लिए उनकी पत्नी या पति खुद से, अपने सामान, नौकरी, दोस्तों यहाँ तक कि दूसरे रिश्तेदारों से पहले आता है। वे दोनों एक-दूसरे के साथ और बच्चों के साथ काफी वक्त बिताते हैं। अपने परिवार के भले की खातिर वे दोनों त्याग करने के लिए तैयार रहते हैं।—फिलिप्पियों 2:4.

यह क्यों ज़रूरी है। बाइबल में, परिवार को बहुत अहमियत दी गयी है। प्रेषित पौलुस ने लिखा कि जो इंसान अपने परिवार की देखभाल नहीं करता वह "अविश्वासी से भी बदतर हो गया है।" (1 तीमुथियुस 5:8) लेकिन, जैसे-जैसे वक्त गुज़रता है, एक इंसान की ज़िंदगी में शायद दूसरी बातें ज़्यादा अहमियत रखने लगती हैं। एक सलाहकार ने पारिवारिक समस्याओं को सुलझाने के लिए सलाह-मशविरे की एक सभा रखी। उसने गौर किया कि वहाँ आनेवाले ज़्यादातर लोगों की सबसे बड़ी चिंता उनका परिवार नहीं बल्कि उनका काम या करियर था। ये लोग, इस उम्मीद से वहाँ आए थे कि उन्हें अपने परिवार की समस्याओं को "चुटकियों में" सुलझाने के तरीके सीखने को मिलेंगे ताकि इन्हें जल्द-से-जल्द निपटाकर अपना पूरा ध्यान अपने काम या करियर पर लगा सकें। यह मिसाल हमें क्या सबक देती है? यह *कहना* आसान है कि हमारे लिए परिवार पहले आता है, मगर *कर दिखाना* मुश्‍किल।

जीत उसी की होती है, जो अपने साथी और बच्चों को सबसे ज़्यादा अहमियत देता है

इन सवालों के जवाब दीजिए। इन सवालों की मदद से आप यह तय कर पाएँगे कि आपके लिए आपका परिवार कितनी अहमियत रखता है।

■ ***जब मेरी पत्नी/पति या मेरा बच्चा मुझसे बात करना चाहता है, तो क्या मैं जल्द-से-जल्द उसकी बात सुनने और उस पर ध्यान देने के लिए तैयार होता हूँ?***

■ ***दूसरों से बात करते वक्त क्या मैं अकसर उन कामों का ज़िक्र करता हूँ जो मैं अपने परिवार के साथ करता हूँ?***

■ ***अगर मेरे परिवार को मेरे वक्त की ज़रूरत है, तो क्या मैं (काम की जगह या कहीं और) ज़्यादा ज़िम्मेदारी लेने से इनकार करूँगा?***

अगर ऊपर दिए सवालों का जवाब आपने 'हाँ' दिया है, तो आप शायद यह मान लें कि जो सबसे ज़रूरी है उसे ही आप सबसे ज़्यादा अहमियत देते हैं। लेकिन आपका साथी और आपके बच्चे इन सवालों के क्या जवाब देंगे? क्या वे भी यह मानते हैं कि आप उन्हें सबसे ज़्यादा अहमियत देते हैं? हम खुद को जिस तरह आँकते हैं सिर्फ वही यह तय नहीं करता कि हमारी ज़िंदगी में सबसे ज़्यादा अहमियत किसे मिलती है। आगे के पन्‍नों पर कामयाब शादी-शुदा ज़िंदगी के और भी कई राज़ दिए हैं, उनके मामले में भी यही बात लागू होती है।

पक्का फैसला कीजिए। ऐसे एक या दो तरीकों के बारे में सोचिए, जिनसे आप दिखा सकते हैं कि आप अपने परिवार को सबसे ज़्यादा अहमियत देते हैं। (मिसाल के लिए: अगर कुछ काम ऐसे हैं जिनमें आपका इतना ज़्यादा वक्त खर्च होता है कि आप अपने साथी और बच्चों को वक्त नहीं दे पाते, तो सोचिए कि कैसे इनमें कटौती करें।)

आपने जो फैसला किया है, क्यों न आप अपने परिवार को भी बताएँ? जब परिवार का एक सदस्य अपने अंदर बदलाव करने की इच्छा ज़ाहिर करता है, तो दूसरे भी वैसा करने के लिए तैयार होते हैं। (*g09* 10)

दूसरा राज़

साथ निभाएँ

“जिसे परमेश्वर ने एक बंधन में बाँधा है, उसे कोई इंसान अलग न करे।”—मत्ती 19:6.

इसका क्या मतलब है। कामयाब जोड़े अपने शादी के रिश्ते को जीवन भर का साथ मानते हैं। जब समस्याएँ खड़ी होती हैं, तो वे इन्हें सुलझाने की कोशिश करते हैं, इन्हें बहाना बनाकर वे शादी के रिश्ते को खत्म नहीं करते। जब पति-पत्नी दोनों में एक-दूसरे का साथ निभाने का जज़्बा होता है, तो उन्हें पता होता है कि उनका साथी उन्हें छोड़कर नहीं जाएगा। दोनों को इस बात का भरोसा होता है कि दूसरा इस रिश्ते की इज़्ज़त करेगा।

यह क्यों ज़रूरी है। पति-पत्नी के रिश्ते में, साथ निभाने का जज़्बा उतना ही ज़रूरी है जितना ज़िंदगी के लिए साँसें। लेकिन, जब बात-बात पर पति-पत्नी में झगड़ा होता है, तब साथ निभाने का वादा गले का फंदा लग सकता है, न कि अपने मन से किया गया भरोसा। ऐसे में, ‘आखिरी दम तक साथ निभाने’ का वादा एक ऐसा समझौता लगता है, जिसमें पति-पत्नी अपनी ज़िम्मेदारियों से भागने का कोई बहाना ढूँढ़ते हैं। वे शायद अपने साथी को *सचमुच* छोड़कर न जाएँ, मगर कुछ और तरीकों से वे उसे “छोड़” देते हैं। जैसे, अगर किसी गंभीर मसले पर बात करना ज़रूरी है, तब वे चुप्पी साध लेते हैं।

जैसे सड़क के किनारे लगा जंगला, गाड़ियों को सड़क से उतरकर गड्ढे में गिरने से बचाता है, वैसे ही साथ निभाने का जज़्बा शादी के रिश्ते को सुरक्षित रखता है

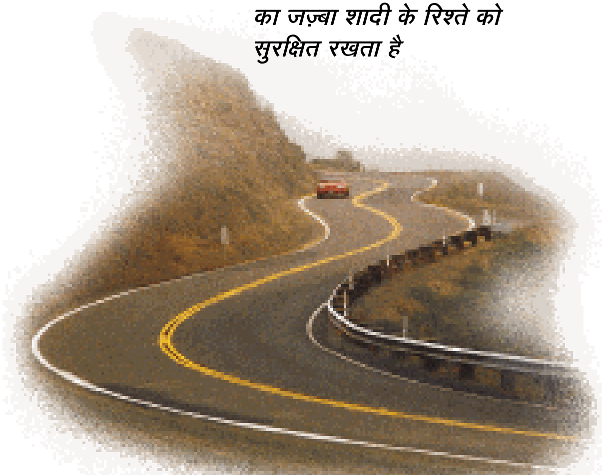

© Corbis/age fotostock

इन सवालों के जवाब दीजिए। नीचे दिए गए सवालों की मदद से, जानिए कि आपके अंदर साथ निभाने का जज़्बा किस हद तक है।

■ *जब हमारे बीच किसी बात पर झगड़ा होता है, तो क्या मैं खुद से यह कहता/कहती हूँ, ‘काश, मैंने इससे शादी न की होती’?*

■ *क्या मैं अपने साथी को छोड़ किसी और के साथ होने की कल्पना करता रहता/करती रहती हूँ?*

■ *क्या मैं कभी-कभी अपने साथी से कहता हूँ, “मैं तुम्हें छोड़कर जा रहा हूँ” या “मैं किसी ऐसे के पास चली जाऊँगी जो मेरी कदर करे”?*

पक्का फैसला कीजिए। एक-दो ऐसे काम करने के बारे में सोचिए, जिनकी मदद से आपका यह इरादा और भी मज़बूत होगा कि आप अपने साथी का साथ निभाते रहेंगे। (कुछ सुझावः कभी-कभी अपने साथी के लिए चंद प्यार-भरे शब्द लिखकर उसे दें। अपने काम की जगह पर अपने साथी की तसवीरें इस तरह रखें कि आप इन्हें देख सकें। या फिर, अपने साथी की खैरियत जानने के लिए अपने काम की जगह से हर दिन उसे फोन कीजिए।)

ऐसे कई तरीकों के बारे में सोचिए और फिर अपने साथी से पूछिए कि उसे कौन-सा तरीका सबसे अच्छा लगेगा?

(*g09* 10)

तीसरा राज़

मिलकर काम करें

“एक से दो अच्छे हैं, . . . क्योंकि यदि उन में से एक गिरे, तो दूसरा उसको उठाएगा।”
—सभोपदेशक 4:9, 10.

इसका क्या मतलब है। परमेश्वर ने यह इंतज़ाम तय किया है कि शादी के रिश्ते में पति, पत्नी का सिर या मुखिया हो। कामयाब जोड़े बाइबल में बताए गए इस इंतज़ाम का आदर करते हैं। (इफिसियों 5:22-24) पति-पत्नी दोनों अपने शादी के रिश्ते में “मैं” और “मेरा” शब्दों के बजाय “हम” और “हमारा” शब्द काम में लाते हैं। जब पति-पत्नी दोनों मिल-जुलकर काम करते हैं तो वे अपने साथी के बारे में सोचकर फैसले करते हैं, न कि ऐसे जैसे अब भी कुँवारे ही हों। वे “एक ही तन” होते हैं, बाइबल के इन शब्दों से पता चलता है कि पति-पत्नी का रिश्ता न सिर्फ मरते दम तक कायम रहनेवाला रिश्ता है बल्कि यह बहुत ही करीबी और आत्मीय रिश्ता भी है।—उत्पत्ति 2:24.

यह क्यों ज़रूरी है। अगर आप और आपका साथी साथ मिलकर काम नहीं करते, तो छोटी-छोटी समस्याएँ राई का पहाड़ बन जाएँगी और इन्हें सुलझाने की सोचने के बजाय आप दोनों एक-दूसरे की गलतियों पर ज़्यादा ध्यान देंगे। लेकिन जब आप और आपका साथी मिलकर काम करते हैं, तो आप दोनों मानो एक हवाई-जहाज़ के पायलट और सह-पायलट की जोड़ी की तरह काम करते हैं। इन दोनों के पास हवाई-जहाज़ को मंज़िल तक पहुँचाने की एक ही लिखित योजना होती है और वे मिलकर काम करते हैं। वे दो अलग-अलग जहाज़ों के पायलट नहीं होते जो आमने-सामने एक-दूसरे से टकराकर चूर-चूर हो जाते हैं। जब किसी मामले पर आप दोनों की राय फर्क होती है, तो एक-दूसरे पर इलज़ाम लगाने और ताने मारने में वक्त और ताकत गँवाने के बजाय आप समस्या को कारगर ढंग से सुलझाने की कोशिश करेंगे।

मिलकर काम करने का मतलब है कि पायलट और सह-पायलट की जोड़ी बनकर उड़ान की एक ही योजना के मुताबिक काम करना

इन सवालों के जवाब दीजिए। नीचे दिए सवालों के जवाब देकर देखिए कि आपमें मिलकर काम करने की भावना किस हद तक है।

■ *मैं जो पैसा कमाता/कमाती हूँ, क्या मैं उसे सिर्फ “अपना पैसा” मानता/मानती हूँ क्योंकि यह मेरी कमाई है?*

■ *क्या मैं अपनी ससुराल के लोगों से कटा-कटा रहता/रहती हूँ, इसके बावजूद कि मेरी पत्नी/मेरे पति का उनके साथ करीबी रिश्ता है?*

■ *क्या पूरी तरह तनाव दूर करने के लिए मुझे अपने साथी से दूर जाना ज़रूरी लगता है?*

पक्का फैसला कीजिए। एक-दो ऐसे तरीके सोचिए, जिनमें आप साथ मिलकर काम करने के मामले में सुधार कर सकते हैं।

क्यों न अपने साथी से ही पूछें कि वह इसके लिए क्या सुझाव देगा/देगी?

(*g09* 10)

आदर करें

‘हर तरह का चीखना-चिल्लाना और गाली-गलौज खुद से दूर करो।’ —इफिसियों 4:31.

इसका क्या मतलब है। झगड़े सभी परिवारों में होते हैं, फिर चाहे उनकी पारिवारिक ज़िंदगी खुशहाल हो या बदहाल। मगर फर्क यह है कि खुशहाल और कामयाब परिवार जब किसी मामले पर बात करते हैं तो वे एक-दूसरे को ताने नहीं मारते, बेइज़्ज़त नहीं करते, न ही गाली-गलौज करते हैं। परिवार के सदस्य एक-दूसरे के साथ उसी तरह पेश आते हैं, जैसे वे खुद चाहेंगे कि उनके साथ पेश आया जाए। —मत्ती 7:12.

जैसे समंदर की लहरें मज़बूत चट्टान को धीरे-धीरे तोड़ सकती हैं, वैसे ही चोट पहुँचानेवाली बोली रिश्तों को कमज़ोर कर सकती है

यह क्यों ज़रूरी है। हमारे शब्द नश्तर बनकर किसी के दिल में इस कदर चुभ सकते हैं कि उसकी जान पर बन आए। बाइबल का एक नीतिवचन कहता है: “झगड़ालू और चिढ़नेवाली पत्नी के संग रहने से जंगल में रहना उत्तम है।” (नीतिवचन 21:19) अगर पति झगड़ालू हो, तो उसके बारे में भी यही कहा जा सकता है। और जब बच्चों की परवरिश करने की बात आती है, तो बाइबल कहती है: “अपने बच्चों को खीझ न दिलाओ, कहीं ऐसा न हो कि वे हिम्मत हार बैठें।” (कुलुस्सियों 3:21) जिन बच्चों के माँ-बाप उनमें मीन-मेख निकालते रहते हैं, वे बच्चे यह मानने लगते हैं कि वे कुछ भी कर लें मगर अपने माँ-बाप को खुश नहीं कर सकते। वे शायद इसकी कोशिश करना ही छोड़ दें।

इन सवालों के जवाब दीजिए। नीचे दिए गए सवालों के जवाब देकर पता लगाइए कि आपके परिवार में हर कोई दूसरे का किस हद तक आदर करता है।

- *मेरे परिवार में, जब किसी बात पर झगड़ा होता है, तो क्या यह तभी खत्म होता है जब कोई तमतमाता हुआ कमरे से बाहर निकल जाता है?*
- *जब मैं अपने साथी या बच्चों से बात करता/करती हूँ, तो क्या मैं अकसर बेइज़्ज़त करनेवाले शब्द इस्तेमाल करता/करती हूँ जैसे, “बेवकूफ” “बुद्धू” या कुछ और?*
- *क्या मेरी परवरिश ऐसे माहौल में हुई जहाँ गाली-गलौज रोज़ की बात थी?*

पक्का फैसला कीजिए। एक-दो ऐसे लक्ष्य रखने के बारे में सोचिए, जिनमें आप अपनी बोली से आदर दिखा सकते हैं। (सुझावः ठान लीजिए कि आप अपनी बात इस तरह कहेंगे कि सुननेवाले को यह न लगे कि आप उस पर इलज़ाम लगा रहे हैं या ताना मार रहे हैं। जैसे, यह कहने के बजाय, “तुम हमेशा ऐसा करते हो. . .” यह कहिए कि “मुझे बुरा लगा जब तुम . . .”)

क्यों न आप अपने साथी को बताएँ कि आपने क्या लक्ष्य रखा है (रखे हैं)? तीन महीने बाद, अपने साथी से पूछकर पता लगाइए कि आपने कितना सुधार किया है।

अपने बच्चों से बात करते वक्त, कुछ ऐसी हदें बाँधिए ताकि आप गाली-गलौज न करें।

अगर आप किसी मौके पर अपने बच्चों के साथ रुखाई से पेश आए या आपने उन्हें बुरा-भला कहा, तो क्यों न बच्चों से माफी माँगें?

(*g09* 10)

लिहाज़ दिखाएँ

"सब लोग यह जान जाएँ कि तुम लिहाज़ करनेवाले इंसान हो।"—फिलिप्पियों 4:5.

इसका क्या मतलब है। शादी-शुदा ज़िंदगी में कामयाब होनेवाले पति-पत्नी अकसर एक-दूसरे की गलतियाँ माफ करते हैं। (रोमियों 3:23) बच्चों के साथ पेश आते वक्त वे न तो हद-से-ज़्यादा सख्ती बरतते हैं, न ही उन्हें बहुत ज़्यादा ढील देते हैं। घर-परिवार को चलाने के लिए वे उतने ही नियम बनाते हैं, जितने ज़रूरी हैं। जब ज़रूरी होता है, तो बच्चे को सुधारने के लिए वे उसे "उचित सीमा तक" डाँटते-फटकारते भी हैं।—यिर्मयाह 30:11, *बुल्के बाइबिल।*

यह क्यों ज़रूरी है। बाइबल कहती है कि "जो बुद्धि स्वर्ग से मिलती है . . . वह लिहाज़ दिखानेवाली" होती है। (याकूब 3:17) परमेश्वर, असिद्ध इंसानों से यह उम्मीद नहीं करता कि वे कभी कोई गलती न करें, तो फिर क्या पति-पत्नी का एक-दूसरे से ऐसी उम्मीद करना सही होगा? छोटी-छोटी गलतियों के लिए दूसरे की बुराई करना उसे सुधरने में तो मदद नहीं देगा, उलटे वह मन-ही-मन आपसे कुढ़ता रहेगा। बेहतर यही होगा कि हम यह हकीकत कबूल करें: "हम सब कई बार गलती करते हैं।"—याकूब 3:2.

सही परवरिश करने में कामयाब माता-पिता अपने बच्चों के साथ पेश आते वक्त लिहाज़ दिखाते हैं। वे न तो हद-से-ज़्यादा अनुशासन देते हैं, न ही ऐसे होते हैं जिन्हें "खुश करना मुश्किल है।" (1 पतरस 2:18) जब किशोर उम्र के बच्चे ज़िम्मेदाराना तरीके से पेश आते हैं, तो वे उन्हें कुछ हद तक छूट देते हैं। वे उनकी ज़िंदगी की हर छोटी-छोटी बात में रोक-टोक नहीं करते। एक किताब कहती है कि एक किशोर की ज़िंदगी के हर पहलू में रोक-टोक करना ऐसा है "जैसे कोई बरखा रानी को मनाने के लिए नृत्य करते-करते थक जाए। बरखा तो नहीं बरसेगी, मगर हाँ आप ज़रूर पस्त हो जाएँगे।"

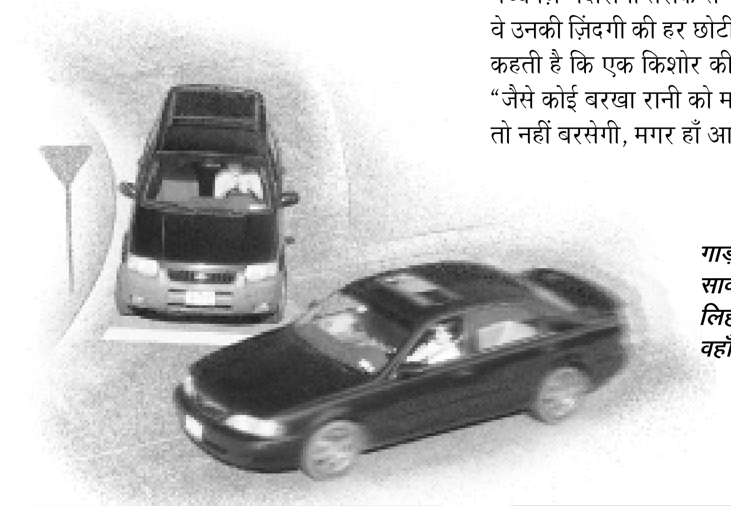

गाड़ी चलाते वक्त, जैसे एक ड्राइवर सावधानी बरतता है, वैसे ही परिवार में लिहाज़ दिखानेवाला इंसान जहाँ मुमकिन हो वहाँ दूसरों को आगे आने देता है

इन सवालों के जवाब दीजिए। नीचे दिए गए सवालों के जवाब देकर देखिए कि आप किस हद तक लिहाज़ दिखाते हैं।

- ***पिछली बार कब आपने अपने साथी की तारीफ की थी?***
- ***पिछली बार कब आपने अपने साथी की नुक्ताचीनी की थी?***

पक्का फैसला कीजिए। यहाँ दिए गए सवालों में अगर आपको पहले सवाल का जवाब देना मुश्किल लगा, मगर दूसरे का जवाब देने में आपको कोई दिक्कत नहीं हुई, तो एक ऐसा लक्ष्य रखने की सोचिए ताकि आप दूसरों को ज़्यादा लिहाज़ दिखा सकें।

क्यों न अपने साथी से बात करें कि आप दोनों लिहाज़ दिखाने के लिए क्या करने की ठान सकते हैं?

जब आपका किशोर बेटा/बेटी, ज़िम्मेदाराना ढंग से पेश आता है, तो सोचिए कि आप किन बातों में उसे छूट दे सकते हैं कि अपनी मरज़ी से फैसले करे?

क्यों न आप अपने किशोर बेटे/बेटी से ऐसे मसलों पर खुलकर बात करें, जैसे उसे किस वक्त तक घर लौटना चाहिए? (*g09* 10)

माफ करें

“एक-दूसरे की सहते रहो और एक-दूसरे को दिल खोलकर माफ करो।”—कुलुस्सियों 3:13.

इसका क्या मतलब है। कामयाब जोड़े पिछली गलतियों से सबक सीखते हैं, मगर पुराने गिले-शिकवे याद करके वे अपने साथी को बार-बार ये ताने नहीं मारते, “तुम *हमेशा* देर से आते हो” या “तुम *कभी* मेरी बात नहीं सुनती।” पति-पत्नी दोनों यह मानकर चलते हैं कि “अपराध क्षमा करना . . . गौरव है।”—नीतिवचन 19:11, *बुल्के बाइबिल।*

यह क्यों ज़रूरी है। परमेश्वर “क्षमा करने को तत्पर रहता है,” मगर इंसान हमेशा ऐसा नहीं करते। (भजन 86:5) पुराने गिले-शिकवे अगर दूर न किए जाएँ, तो नाराज़गी इस हद तक बढ़ती जाएगी कि फिर माफ करना नामुमकिन लग सकता है। दोनों साथी शायद अपनी भावनाओं के बारे में बात ही न करना चाहें और दोनों को इस बात की परवाह न हो कि दूसरा क्या महसूस कर रहा है। नतीजा, दोनों को लगता है कि उनका यह रिश्ता उनके लिए फंदा बन चुका है जिसमें प्यार नाम को नहीं है।

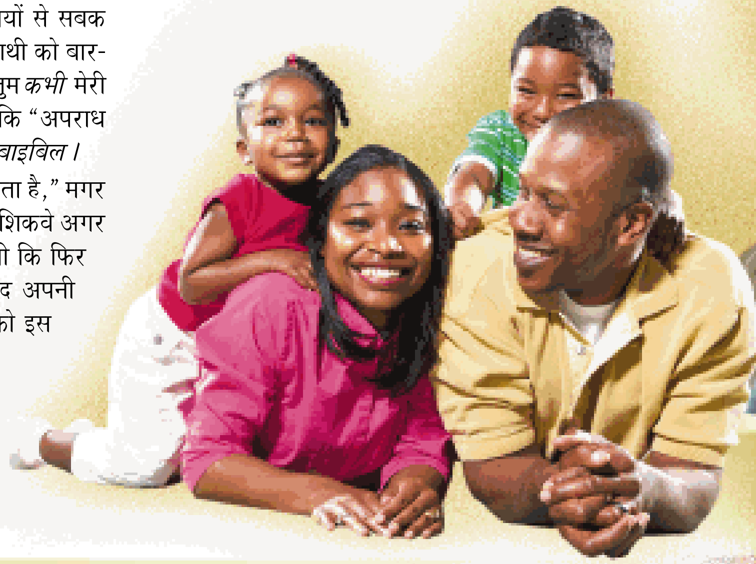

जब आप माफ करते हैं, तो मानो कर्ज़ माफ हो जाता है। बाद में उसका हिसाब रखने की कोशिश मत कीजिए

इन सवालों के जवाब दीजिए। अपने साथी के साथ की वे पुरानी तसवीरें देखिए, जो आपने शायद शादी के बाद के सालों में या शादी से पहले की मुलाकातों के दौरान खींची थीं। शादी-शुदा ज़िंदगी में समस्याएँ उठने से पहले आप जो प्यार महसूस करते थे, उसे फिर से जगाने की कोशिश कीजिए, क्योंकि समस्याओं की वजह से शायद अपने साथी के बारे में आपका नज़रिया बदल गया है। अपने साथी की उन अच्छाइयों के बारे में सोचिए जिनकी वजह से आप उसकी तरफ पहली बार आकर्षित हुए थे।

■ ***अब आप अपने साथी की किन अच्छाइयों की सबसे ज़्यादा कदर करते हैं?***

■ ***अगर आप माफ करने का गुण और ज़्यादा दिखाएँ, तो सोचिए कि इसका आपके बच्चों पर कैसा अच्छा असर होगा।***

पक्का फैसला कीजिए। अगर आज अपने साथी से आपका झगड़ा हो गया है, तो पिछले गिले-शिकवों को इस झगड़े से अलग कैसे रखें, इसके एक-दो तरीकों के बारे में सोचिए।

क्यों न आप अपने पति/अपनी पत्नी की उन अच्छाइयों के लिए उसकी तारीफ करें, जो आपको बेहद पसंद हैं?—नीतिवचन 31:28, 29.

बच्चों के साथ पेश आते वक्त आप कैसे माफ करने का गुण दिखाएँगे, इसके कुछ तरीकों पर ध्यान दीजिए।

क्यों न बच्चों के साथ माफ करने के गुण के बारे में और माफ करने से परिवार के हर सदस्य को होनेवाले फायदे के बारे में बात करें? (*g09* 10)

बुनियाद मज़बूत रखें

बाइबल के सिद्धांतों की पक्की बुनियाद पर टिका आपका परिवार हर तूफान का डटकर सामना कर सकता है

इसका क्या मतलब है। अगर किसी परिवार में आपसी रिश्ते बहुत मज़बूत हैं, तो यह मज़बूती अपने-आप नहीं आ जाती। ठीक जैसे एक मकान की मज़बूती के लिए ज़रूरी है कि उसकी बुनियाद पक्की हो, ताकि वह बरसों-बरस टिका रहे, वैसे ही परिवार में रिश्तों की मज़बूती के लिए भी पक्की बुनियाद ज़रूरी है। कामयाब परिवारों में मज़बूत रिश्ते ऐसे मार्गदर्शन पर टिके होते हैं, जो वाकई बहुत फायदेमंद होता है।

यह क्यों ज़रूरी है। पारिवारिक जीवन पर सलाह देनेवाली किताबों, पत्रिकाओं और टीवी कार्यक्रमों की कोई कमी नहीं है। शादी की समस्याओं पर सलाह देने-वाले कुछ सलाहकार, परेशान जोड़ों को साथ रहने की हिदायत देते हैं, जबकि दूसरे उन्हीं जोड़ों को अलग होने की सलाह देते हैं। ऐसे मामलों की जाँच करने-वाले विशेषज्ञ भी वक्त के साथ अपनी राय बदलते हैं। मिसाल के लिए, एक जानी-मानी चिकित्सक (थेरपिस्ट) की बात लीजिए, जो खास तौर पर किशोर बच्चों की समस्याओं को सुलझाने की कोशिश करती है। सन् 1994 में उसने लिखा कि अपने करियर की शुरूआत में वह मानती थी कि "अगर माँ-बाप में से कोई एक बच्चे के साथ रहता है और खुश है, तो यह बच्चे के लिए ज़्यादा अच्छा है, बजाय इसके कि माँ-बाप दोनों साथ रहें मगर एक-दूसरे से खुश न हों। मेरा मानना था कि पति-पत्नी में अगर निभती नहीं है, तो ऐसे रिश्ते को झेलने से अच्छा है तलाक ले लिया जाए।" मगर, बीस साल के तजुरबे के बाद उसकी राय बदल चुकी है। वह कहती है: "तलाक बहुत-से बच्चों को अंदर तक तोड़ देता है।"

लोगों की राय बदलती रहती है। मगर सबसे बेहतरीन सलाह जो दी जाती है, वह कहीं-न-कहीं परमेश्वर के वचन बाइबल में पाए जानेवाले सिद्धांतों से जुड़ी होती है। इस पत्रिका के पेज 3-8 पर दिए इन लेखों को पढ़ते वक्त आपने गौर किया होगा कि पन्ने के ऊपरी हिस्से में बाइबल का एक सिद्धांत दिया गया है। इन सिद्धांतों ने बहुत-से परिवारों को सच्ची कामयाबी हासिल करने में मदद दी है। दूसरे परिवारों की तरह ये भी समस्याओं का सामना करते हैं। मगर फर्क यह है कि बाइबल से उन्हें शादी-शुदा ज़िंदगी और पारिवारिक जीवन के लिए मार्गदर्शन की पक्की बुनियाद मिली है। बाइबल के बारे में यह उम्मीद करना सही भी है, क्योंकि इस किताब की रचना करनेवाला यहोवा परमेश्वर है जिसने परिवार के इंतज़ाम की शुरूआत की थी।—2 तीमुथियुस 3:16, 17.

सुझाव। पेज 3 से 8 के ऊपरी हिस्से में दिए गए शास्त्रवचनों की एक लिस्ट बनाइए। इसमें बाइबल की वे आयतें भी लिखिए जिनसे आपको मदद मिली है। यह लिस्ट ऐसी जगह रखिए जहाँ यह आपको आसानी से मिल सके और अकसर इसे देखिए।

पक्का फैसला कीजिए। ठान लीजिए कि आप *अपने* परिवार में बाइबल के सिद्धांतों पर अमल करते रहेंगे। (*g09* 10)